अथ दरदर क्षेत्र माहात्म्य।

श्री बेनीमाधव कवि कृत

जिसके छापने का कुल अधिकार ग्रन्थकर्त्ता ने

हरिप्रकाश यन्त्रालय के सम्पादक

बाबू अमीर सिंह को

दे दिया।।

काशी हरिप्रकाश यन्त्रालय नं० १ नेपाली खपरा में

अमीर सिंह ने मुद्रित किया।

१८८७.

अथ दरदर छैन माहो

श्रीगणेशायनमः ।

दोहा। श्रीगनपति के पदकमल बंदि महामुद पाय। कहौं महातम छेनभृगु सुकविन कौ सिरनाय ॥ १ ॥ छंदसिपरनी। श्रीराधा कृष्ण वंन्दे मुरली मनोहर क्रुतं। पीताम्बिर वरं मुकुटं गोपीजन वल्लभं ॥ सदा जमुनो कूले रास क्रीड़ा विलासं मुनिन्द्रादैं वंन्दे देवदेवेस देवं ॥ २ ॥ दोहा। जै दिनकर आनँद कर हरन सकल तम जूह। तुव प्रकास सव जगत के होत प्रकास समूह ॥ ३ ॥ वानी जग रानी सुमिरि वार वार सिर नाय। करहु कृपा जन जानिकै दीजै ग्रन्थ वनाय ॥ ४ ॥ संकर दीन दयाल तुम हरहु विघन सम तूल। करहु कृपा मरदन मयन रहहु सदा अनुकूल ॥ ५ ॥ प्रथमे जुग भृगुमुनि भए ते यह कियो विचार। जाय कहूं तप कीजिऐ पावन थल निरधार ॥ ६ ॥ सवैया। कासी प्रयाग गए मथुरा हरद्वार गंगोतरी त्यौं सुखदाई। वद्रिका आश्रम और विंध्याचल ज्वालामुषी मैं रहे कछु काई ॥ और अनेकन तीरथ में गए पै नहीं चित्त कहू ठहराई। आइ वसे तव गंग के तीर मैं पर्नकुटी निज हाथ वनाई ॥ ७ ॥ दोहा। कछुक दिवस जव तप किऐ तव यह कियो विचार। सरजू आइ मिलै यहां तव कछु होय वहार ॥ ८ ॥ पुनि लागे तपकारन भृगु बीते वर्ष हजार। ब्रह्मा वि-

अगु महेस तव आय गए एक बार ॥ ९ ॥ लषि भृगु हिय हर्षित भए अस्तुति किये महान। तुम त्रिदेव त्रैलोक के पालक हौ भगवान ॥ १० ॥ भलो करी मोपर कृपा दीन्ह्यौ दरस महान। तुम देवन के देव सब लायक परम सुजान ॥ ११ ॥ तब ब्रह्मा बोले हरषि करहु सुतप केहि हेत। कारन कहहु बुझाइ सब तुमहौ परम सचेत ॥ १२ ॥ का चाहहु सों कहहु सब नेकु न लावहु बार। हम सब सुनि अपने हिए करिहैं कछुक विचार ॥ १३ ॥ सवैया । बोले तबै भृगु चित्त प्रसन्न कै मो मन मैं यह हौसला आये। कीन्हें कछू तप कानन मैं तेहि के फल दर्स त्रिदेव के पाये॥ सो कहौ कारन आपनो आपसो जोरि दुहूं कर सीस नवाये। कीजिऐ पूर मनोरथ हे प्रभु तो जस बेद पुरानन छाये ॥ १४ ॥ एक समै यहि आस्रम मैं बसि ध्यान कयौ हरि के सुपदाई। आकस मात कहा बाहिर हमरे मन मैं यह बात जु आई ॥ भागीरथी मैं मिलै सरजू यहां तौ अति होय महा सुपदाई याते किये। तप बैठि यहां यह आपसो कारन सत्य सुनाई ॥ १५ ॥ दोहा। जो तुम होहु प्रसन्न विधि संभु स्वयंभु समेत। तौ दीजै वरदान यह हौ सब कृपा निकेत ॥ १६ ॥ सवैया। भृगु के सुनि बैन प्रवीन पुनीत हिये हर्षे शिव ब्रह्म मुरारी। क्यौं न कहौ यह बात मुनीस अहौ तपपुंज महाव्रत धारी॥ है कछु हानि न लाभ तुम्है जग के हित को यह बैन उचारी। याही विचारि कै देत तुम्है वर होइ अबै प्रन पूर तुम्हारी ॥ १७ ॥ दोहा। यह सुनि हिय हर्षे मुनी कीन्ह प्रनाम बहोर। तुम त्रैदेव कृपा करी पूर प्रतिज्ञा मोर ॥ १८ ॥ तब

सरजू ते, हर्ष जुत कह त्रिदेव यह बैन। तुम गंगा सों मिलि करो संगम आनद देन ॥ १९॥ सरजू हिय, हरषाइ कै कहत भई यह बैन। हम गंगा सों मिल बहब यामैं संसै है न॥ २०॥ बहन लगी ता दिवस ते गंगा में मिलि धार। सुर किन्नर गंधर्व नर कीन्हें जै जै कार॥ २१॥ दद्दरी क्षेत्र प्रसिद्धि भो जंबूद्वीप महान। कातिक पूनो को यहां मेला होय महान॥ २२॥ कातिक पूनो के तबै हरि हर विधि मुनि संग। करि नहान आनंद जुत दिय वरदान अभंग॥ २३॥ सवैया। कैहउ पापी सुरापी कहु तो जिन जान अजानहु में पगुधारे। न्हातही संगम में ततकाल सुधोय कै पाप को जन्म सुधारे॥ देव अदेव या मानुष होय तौ अंत समैं हरिधाम पधारे। या वरदान दिये त्रैदेव, जे है त्रै लोक के प्रान अधारे॥ २४॥ दोहा। यह कहि ब्रह्मा विष्णु शिव गए सु निज निज धाम। भृगुमुनि निज आश्रम रहे पूरे सब मन काम॥ २५॥ सवैया। कातकी पूनो प्रभात समै नर न्हातही पावत पुंज प्रभा को। लक्ष्मी तापै प्रसन्न रहै सुख संपति संतति बाढ़त ताके॥ पुन्य महा वेनीमाधो कहै, श्रुती सारद नारद गावत जाको। सरजू अरु गंग के संगम को महिमा कहि हारे भुजंगम याको॥ २६॥ तीरथ महान है पुरान में प्रमान याके जहां पगुदेत छूटै सकल अभेवता। जग्य जप दान ध्यान करिवे को जोग यत कलि में विसेष फल पावत जे सेवता॥ वेनीमाधो कहै नर, किन्नर गंधर्व जक्ष पावत प्रतच्छ मुक्ति त्यागि कै हमेवता। कातिक के पुनिमा बिचारि भृगुक्षेत्र माहि आवै देवपुर ते नहान हेत दे

बता ॥ २७ ॥ आवै जिते सन्यासी बिरागी उदासी महा मन में मुद पागे। और अनेकन पंथ के संत सभै निज मंडली लै अनुरागे ॥ दानव देव सवै नर भेषक कातिकी पूनव आवन लागे। जन्म अनेकन के जुरे पाप ते संगम न्हाइ वहाव न लागे ॥ २८ ॥ गारहस्त बानप्रस्त ब्रह्मचारी औ अचारी आवै सुविचारी देस देसन ते धाइकै। राजा राव राना मरदाना दानादार जेते तेज चलै आवै सभै सुप अधिकाय कै ॥ बेनीमाधो कहै पापी अधम सुरापी बृन्द तरि तरि जात सब संङ्गम नहाय कै। भोरहोत भारी नरनारी बाल बृद्धन के कातिक की पुर्णिमा पुनीत दिन पाय कै ॥ २९ ॥ पाठी चढावत पीठा कोउ कोउ मोदक लै मन मोद चढावै। आपने आपने कुंण्यन संग लै प्रातहि जायकै संगम न्हावै ॥ गावै बजावै उछाह भरे अपने मन भावतही फल पावै। दरसै परसै भृगु के पद को नर नारी जिते दरदरी मध आवै ॥ ३० ॥ आवैं महंथ जिते मठधारी निसान गड़ाय नकारा वजावैं। आपने आपने पंथ के संतन और उपासक टेरि जिमावैं॥ कातिक सुक्ल एकादसी ते अरु पूर्णिमा ताईं यहै मन भावै। एक दिना विते मार्गसीर्ष के माय नहाय सवै घर जावैं॥ ३१ ॥ होत प्रभात अन्हाय कै संगम दै कछु दान महा सुप छावै। कै कंटिआ कै लिए जल लोटन मोद भरे भृगु मंदिर जावैं॥ प्रेम भरे अन्हवाइ कै पादुका सीस नवावत बांछित पावें। आवै जिते नर नारी सभै तुलसीदल फूल बतासा चढावैं ॥ ३२ ॥ पंडित आवै प्रबीन जिते जल न्हाइ कै बाचि पुरान सुनावैं। आपनरै उन पुस्तक आर

न औरन के भव सिंधु के नावै ॥ भोर ते बैठि कै घाम प्रजंत ले प्रेम भरे गुन गोविंद गावै । ऐसे अनंद सदा ददरी मह आइ कहै जुपै टेव न जावै ॥ ३३ ॥ आवैं काममीरी करनाट देस वारे लोग पंपापुरी वासी दास दासी जुत आवते। गुजरात माड़वार औरउ कुमाऊ वारे नैपाल देसी महामोद को लुटावते ॥ द्वारिका ते दूरि भरपूरि कै उछाह नि सो आवैं सुर ग्यानी ग्यान चरचा बढ़ावते । पीय पीय पाप तन धोए धोए संगम मैं अंत समैं सुचि बैकुंठ को सिधावते ॥ ३४ ॥ सवैया । आवैं बंगाली बंगालिन संग लै भंग पिये मथुरा के निवासी । बेद पुरानन के बकता चले आवैं तहाँ मिथिला के विलासी ॥ आवत बृद्ध औ बार लिये जे बड़े सबते है महा गुनरासी । न्हावत संगम हर्ष भरे गुन गावत है नितही अविनासी ॥ ३५ ॥ आवत जोगी जे जोग करें अरु भोगी जिते नित भोग विलासी । पुन्य सरूप जे जीवन मुक्ति है आवैं तेज सु कासिका वासी ॥ पति को लिए संग उमंग भरी पंजाबिनी आवति हैं गुनरासी । न्हावत संगम मोद भरे गुन गावत है नितही अविनासी ३६ ॥ मगध देसीरु भोजपुरी चले आवैं सबै कुरुक्षेत्र विलासी । जैपुरी आगरा कान्हपुरी भृगु क्षेत्र मैं आ भए प्रेम प्रकासी ॥ पापी सुरापी पुरान जिते जमदूतन ते मग मैं करै वाँसी । न्हावत संगम मोद भरे गुनगावत है नितही अविनासी ॥ ३७ ॥ आवैं बालमीक वो बसिष्टमुनि संग लेले अंगिरा पुलस्त हूं अगस्त तप सो मढ़े । बिस्वामित्र परम पवित्र संग सिषन के आवै दुरवासा आसा न्हान हिय मैं

बढ़ै ॥ नारदादि सनतकुमार संग सज्जन के गज्जन के हेतु आय आय मंत्रहू पढ़ै। आगे आगे आवत मुनीस त्रिंद पाव पाव पीछे पीछे देव दिव्य वाहननि पै चढ़ै ॥ ३८ ॥ आवै नरायन लच्छमी संग लै कोटि अनंग लजावत सोभा। नानी के साथ विधाता अनंदित आवत इंद्र सची जुत लोभा ॥ संकर गौरि गजानन संग लै अंग भुजंगन राजत सोभा। सूरज सोम लिए संग तारन्ह आई लगावत संगम चोभा ॥ ३९ ॥ आवै कुवेर विमान चढ़े सुष पाइ कै द्रव्य समूह लुटावै। किन्नर जच्छ लिए वरुनौ गंधर्वऊ गान करै सुष छावै ॥ रंभा तिलोत्तमा संग सषीं लिए तीरथ देषि कै मोद बढ़ावै। वेनीमाधव या विधि सो जस गाइ कै कोटिन जन्म के पाप नसावै ॥ ४० ॥ कवित्त। कस्यप कपिल गर्ग गौतम अनंद भरे संग निज नारी लै उमंग उपजावते। वेनीमाधौ लोमस प्रसिद्ध सिद्धि संग लिए भृगुछेत्र आइ महामोद को लुभावते ॥ सतानंद ग्याता जमदग्नि संग नारी लिए कौसिक मुनीस जगदीस गुन गावते। पावते परम पद छावते जो मंजुम मैं छावते मही मैं जस सरस बढ़ावते ॥ ४१ ॥ गावै जस परम पुनीत नित सेस जाके पावत न पार सो अपार कहा कहिये। देवता प्रसिद्ध सिद्ध आवत रहत सदा भृगुछेत्र वास पास मेरो नित चहिये ॥ चारि वेद गावत सनातन पुरान जस याते बेनीमाधव सरन गहि रहिये। राम कथो आठो जाम गेह तजि नेह तजि कुटिल कपूतन कै लातु बान सहिये ॥ ४२ ॥ भसम स्वर्ग पयान नेवासी सभै सुषरासी यहै अभिलाषै। चलिहै दद्री मैं नहान हित

सो परसपर आपुस मैं यह भाषैं ॥ बालक बिद्ध जुवा नर नारी अनंद सो प्रेम सुधा रस चाषैं । भौ फंद मैं भूलि परे न कवौ नित मोषव वेनी हिये मह राषैं ॥ ४३ ॥ कहूं होत दान जग्य होम तप ध्यान हरि पूजन विधान कहूं परम ल-लाम है । बेद धुनि घंटा धुनि संष कहनाई धुनि दुंदभी म्रदंग धुनि होत आठो जाम है ॥ वेनीमाधो कहै कहूं पंडित पुरान कहै आनन्द को लहै सो ग्रहस्त धाम धाम है ॥ सोहत मुनीसन के परनकुटी है जहां ऐसे भृगुक्षेत्र को हमारो परनाम है ॥ ४४ ॥ गीता को पढ़त कोऊ परम पुनीता कोउ सीताराम राम राम कहत मुनीस है । व्याकरन जोतिस पढ़ावै कोऊ काव्य रस अलंकार लक्षना सुछंद बिसौ बीस है । बेनीमाधो कहै कोऊ सिद्ध करै मंत्रन को जंत्रन को भरे कोउ नीचे किए सीस है ॥ बेलपत्र पुस्प धूप दीप नैवेद लेके घंटा को बजाइ कोऊ पूजै सक्ति ईस है ॥ ४५ ॥ सवैया । कातिक मैं जब होत समागम सिद्धि मुनीसन की सुषदाई । कोऊ करै तहां ग्यान निरूपन कोऊ कथै सुभ सक्ति बढाई ॥ कोऊ कहै जप ध्यान करो यहि ते सब जीव को होत भलाई । बेनीमाधो कहै तजि कष्ट पषंड के नाम जपौ नितही रघुराई ॥ ४६ ॥ एक पद ठाढे कोऊ करत तपस्या संत सिसिर हेमंत कोऊ लेत जल सैन है । बेनीमाधो कोउ पंच अगिन प्रचंड तापै भानु सनमुष कोउ ठाढे पोले नैन है ॥ उर्ध मुष झूला झूलै करै नित धूमे पान निराहार ब्रत कोऊ करै गुन ऐन है । कोऊ कहै सीता राम राधा कृष्ण कहै कोऊ कोऊ ...

बैन है ॥ ४७ ॥ सवैया । गेरुआ धारन कीते किये कोउ अंङ्ग बिभूति जटा सिर धारे । नंगा षड़े कोउ ध्यान धरे हरयें हरि के सुभ नाम उचारे ॥ भूतल खोदि तपस्या करै कोउ बेद पढै निज जन्म सुधारे । दंड कमंडल्ल को करमैं धरै वोऊ फिरै तपसी हरि प्यारे ॥ ४८ ॥ दैके त्रिपुंड ललाट पै उत्तम पारबतीपति को अवराधे । अक्षत चंदन बेलके पत्र लै आक धतूर चढ़ावत साधे ॥ धूपरू दीप चढ़ाइ नवेद को अस्तुति ठानि मिठाई उपाधे । संत अनंत पुकारत हैं सब श्री बलदेव मुरारि औ राधे ॥ ४९ ॥ कोऊ गुंज माल बन माल तुलसी के माल तिलक बिसाल भाल सोभा सरसाई है । कोउ ब्रह्मचारी कंदमूल के अहारी कोऊ निराहार ब्रतधारी महा सुषदाई है ॥ बेनीमाधो कहै और नाहांलों बषान करों भृगुक्षेत्र फल देस देसन मैं छाई है । पाइ है बड़ाई सब देसन बताई व्यास देव सुषदाई निज ग्रंथन मैं गाई है ॥ ५० ॥ कोऊ कुसासन साधि के सासन भोग बिलास जिन्है नहि भावै । माला लिये गरमैं कर मैं छल छंदन त्यागि समाधि लगावै ॥ अक्षत चंदन लै तुलसी दल सालिग्राम कोउ अन्हवावै । रैन दिना कोउ बैठि एकांत मैं गोविंद गोविंद के गुनगावै ॥ ५१ ॥ पंन्हे कोपिंट गोविन्द भजै कोऊ सीस जटा वो बिभूति रमावै । ठाकुर के ढिग न्रत्त करौं कोऊ ताल म्रदंग सितार बजावै ॥ धोटत भंग उमंग भरे निन गंग के तीर पै ध्यान लगावै । माधव बेनी बिलोकि कै संत की मंडली प्रेम सो सीस नवावै ॥ ५२ ॥ चुनत फूल कोऊ कर सो सुचित्त न नलै कोऊ पथ्य जुतासन । बैठ कुसासन

आसन मारि कै ध्यान धरै कोउ मुक्ति के आसन ॥ संख मृदंगन घंटन की धुनि होत चहूँदिसि बासन बासन । जौ सतसंग चहौ बेनीमाधव जाय बसौ नित ही भृगुआसन ॥ ५३ ॥ कोउ रमायन पाठ करैं तुलसी कृत संतन को सुखदाई । प्रेम भरे सुरसागर गावत कोउ हरीमचं मोद बढ़ाई । कोउ कबीर की साखी पढ़ैं सुनैं भक्त सबैं चित दै सिरनाई । नाटकसाखी प्रकास करैं नित नाटकसाख जो ग्रंथ बनाई ॥ ५४ ॥ स्याम सुवेद पढ़ै कोउ पंडित कामरु क्रोध सभै बिसराई । कोउ पढ़ैं रिगवेद अभेद सो भूलत तौ कोउ टेर बताई ॥ कोउ पढ़ैं जजुरै चित दै रुचि कोउ सुनैं मन मैं सुखपाई । गान करैं कोउ संत अथर्वन लै कै प्रवीन हिये हरषाई ॥ ५५ ॥ कोउ बेदांत पढ़ैं सुख सो मठ जाप जपै जल मैं कोउ ठाढ़े । जोग पढ़ै कोउ भोगन को तजि सीतरु उष्म सहौ तन डाढ़े ॥ कोउ मिमांसा पतंजुली को पढ़ि ध्यान धरैं हरि को नित गाढ़े । सांख्य न्याय पढ़ैं बेनीमाधव वो ज हृदै अति आनंद बाढ़े ॥ ५६ ॥ कवित्त । ब्रह्म विष्णु शिव पद्म नारद गरुड़ भनी बावन प्रसिद्धि रुचि मेरो मन भायो है । मच्छ कूर्म संदर बराह बेनीमाधो कवि भागवत जस देस देसन मैं छायो है ॥ ब्रह्म बैवर्त अग्नि असकंध मारकंडे लिङ्ग ब्रह्मांड सो भविष्य दरसायो है । व्यास देवगायो अष्टादस सुख पायो सूत सौनकादि रिषिसे सुविधि तें सुनायो है ॥ ५७ ॥ भारथ गावत कोउ जथा रस पारथ को जस पार न पावैं । जो बलमीक रचे अति प्रेमसे सो सब आदि रमायन गावैं ॥ कौमुदी चंद्रिका भास्य प्रजानत्यों पंडित बालनधी को

पढ़ावैं॥ मौन धरे कोउ ध्यान धरे तेहि के फल चारि पदा-
रथ पावैं ॥ ५८ ॥ आयो एक पातकी पुरान वङ्कालन के
अधम सुरापी मूढ़ बूढ़ पै न लाज है । बेनीमाधो कहै जल
छुअत पवित्र भयो मर्यो ततकाल धाए जमदूत साज है ॥
ताही समैं आय विष्णु दूत मजबूत बड़े जान पै चढ़ाय कै
पठाए स्वर्ग काज है । देषौ षड़े वीर भृगुक्षेत्र माहं गंगतीर
पाप बिललात अललात जमराज है ॥ ५९ ॥ कोऊ एक पात-
की बिचारे भृगुक्षेत्र माहं आए काहू साथ अनजाने बिन
काज है । बेनीमाधो कहै तहां रहिगे कछूक द्यौस द्वार द्वार
भिक्षा मांगि पात तहं नाज है ॥ बीते दिन छूटे तन ताको
गंगतीर आय जमदूत लैकै चले नर्कही के काज है । बीच
बीच मग मिले हरि दूत तासो लीन्हें छीनिलै गए तहांई
जहां सुर सिरताज है ॥ ६० ॥ सवैया । संत सबै उपदेस ब-
तावत तीरथ दान दया उरलावो । ज्यौं कविताई करो कछु
आपनो त्यौं नितही हरि के जस गावो ॥ पायो सो पायो
अनन्द रहौ पर नेकु नहीं उर क्षोभ बढ़ावो । भूषे को अन्न
पियासिन को जल दै द्विज देवन को सिरनावो ॥ ६१ ॥ सी
स मैं पीरन नेकु रहै विनि नैनन जोति भली विधि जागै ।
नासिका कानन नेकु दुषै अधरान मैं लाली सदा अनुरा-
गै ॥ दंत चलै न हलै कबहूं रसनानि मैं स्वाद भली विधि
लागै । जो भृगुक्षेत्र मैं बास करै सुष भूरि बढ़ै दुष दूरिसो
भागै ॥ ६२ ॥ कंठरु बाहु करेजन पेट मैं व्यापै नहीं रुज
सूल न लागै । जानु कटी सब गअंन मैं सुष पूरि रहै छिद्र
ते भलि जागै ॥ घुटना अरु गुल्फ जिती अंगुरी तरवान मैं

लालिमा सो अति पागै। जो भृगुक्षेत्र में वास करै सुख भरि भरै दुख दूरि सो भागै ॥ ६३ ॥ लागै नहीं ज्वर पित्त कवौं कफपित्त एकाहि के आवै न नेरे। दाहिक तैहिक और चतुर्थिक दूरि रहै सनिपातहूं टेरे॥ पंडु प्रमेह भगै विसरो चरकादिक रोगनहो भट भेरे। ज्यौं भृगुक्षेत्र को ध्यान धरै कवि माधव नाम रटै जो सबेरे ॥ ६४ ॥ होत है खाँसी दमा न कवौं कुचकी नहिं आवत नेरे कभाई। होत नहीं अतिसार भयङ्कर दूरि भए गृहनी डरपाई ॥ हल सुजाक न दाद सतावत औ मिरगी दुरि दादहूं धाई । जौ मति संमत कातिक पूनो नहाइ भृगू प्रभु क्षेत्र में धाई ॥ ६५ ॥ साँप न काटत वृश्चिक नाहर स्वान नहीं कवहूं नियराई। जंवुक भेड़िया औ घरियार न बोच वली धरि नीर मैं खाई॥ रोकन मारत कानन में जमदूत नहीं कवहूं नियराई। जौ भृगुक्षेत्र में वास करै नरको नरहूं हरि को पद पाई ॥६६॥ व्यापै नहीं ग्रघ पीड़ा कवौं दुख देत नाप्रत पिसाच सदाई। डाकिनी साकिनी त्यौं ब्रह्मराछस पास न आवत दूरि पराई ॥ आयुस वाढ़त सन्तति संपति सज्जन संग सदा सुख पाई। कातिक पूनो प्रभात समै नर बारक ज्यौं भृगुक्षेत्र नहाई ॥ ६७ ॥ हाकिम डाड़ै न चोर हरै धन विक्रम बुद्धि बढ़ै जस जागै। सत्रु समूह नगीच न आवत भूप सदा तिनते अनुरागै ॥ देस विदेस कलेस न पावत देखत दूरि दरिद्रता भागै। जे भृगुक्षेत्र बसे छन एक तिन्हैं दुख दूखन एक न लागै ॥ ६८ ॥ दोहा । अब मुनि वाग विहार को करौं सु कछुक वखान। सज्जन सुमति सुसील जन सुनहु

सकाल है काल ॥ ६९ ॥ सवैया । लागी घनी अमराई चहुं दिसि ताल तमालनि को तरु सोहैं । केवरा केरा कदम्बनि को तरु देखतही नर देवता मोहैं ॥ श्रीफल दाड़िम और सतालू अंजीरन को तरु लाखन जोहैं । माधवबेनी अनूपम नाम है जा छवि को बरनै कवि को है ॥ ७० ॥ दाख बदाम छोहारन को तरु देखि परैं सब बागन बागै । सेव अंगूर लसै अखरोट जंभीरिन कौ तरु उत्तम लागैं ॥ पिस्ता पियार कहां लौं कहौं जिन्हैं देखतही मन प्रेमनुरागै । चीची लवँग सुलाचिन्ह कौ तरु फूले फरे दुख नेरे न लागै ॥ ७१ ॥ गेंदा गुलदावदी गुलाबन के पुंज मंजु सेवती चमेली पै मलिन्द बहु गुंजरैं । फूले गुलसब्बो गुलमेंहदी अनेक रंग देखि परै जहां तहां करना के कुंजरैं ॥ मौलसिरी मालती महकि रही चारों ओर सोर करैं ठौर ठौर पच्छिन के पुंजरैं । कहिए कहां लौं कछु कहत न बनि आवै लपटी लतन पै बेला फूले जजरै ॥ ७२ ॥ फूले गुलाबांस गुलहजारा बहु रंगन के नरगिस नवीन के बहारदार क्यारी है । कुन्द कचनार चंपा चटक चमकदार बँधुक बहारदार लागै छवि प्यारी है ॥ बेनीमाधो कहैं सोहै माधवी मधुप पूजे सोनजुही कासिनी लसत गुनवारी है । फूले गुलनार बेसुमार ठौर ठौर सोहैं मुनिन के धाम धाम ऐसो फुलवारी है ७३ दोहा । तुलसी तरु जहं तहं लगे गुंजत गुंज मलिन्द । जग्य जाप सुख सों करत जहं तहं तपसी वृन्द ॥ ७४ ॥ यह भृगुक्षेत्र महात्म वर रच्यौं सुमति अनुसार । देखि पुरातन रीति कछु पंडित करहु बिचार ॥ ७५ ॥ नहिं जानौं कछु

छन्द गति नहिं रस रसिक प्रवीन । केवल हरि अरु गुरु कृपा कीन्हे ग्रंथ नवीन ॥ ७६ ॥ सज्जन सुकवि प्रवीन सों विनै करों कर जोरि । जहं भूले भ्रम सो तहां सुमति संवारेहु मोरि ॥ ७७ ॥ जो भृगुक्षेत्र महात्म वर पढ़ैं सुनैं चित लाय । चारि पदारथ ताहि के करतलहोंहिं सहाय ७८ प्रति संमत कातिक विषे लागै रुचिर बजार । देस देस के वनिक तित बेचन वस्तु पजार ॥ ७९ ॥ ताको कछु संक्षेप करि बरनौं मति अनुसार । सुनहु सुमति सज्जन सकल जिनको विमल विचार ॥ ८० ॥ सवैया । आवैं किते सौदागर नागर सिंधक काबिल के रहवैया । चीन कोचीन के वस्तु लिए नैपाल के आवत लोग लोगैया ॥ ढाका से आवैं घने बैपारी जे उत्तम मखमल के बेचवैया । दखिनी चीज पजारन रंग के बेचन आवत देखहु भैया ॥ ८१ ॥ चांदनी तंबू कनात बनात बिकैं सुखपालकी बेस पजारन । घोड़ा परव्वी विलायती काबुली भली पचाड़ी के लागे कतारन ॥ ऊंट के झुंड किनारे बंधे गिरि के संग सोहत झुत्थ सुवारन । हाकिम को पहरा चहुँ ओर परे सब घाटन घाट पजारन ॥ ८२ ॥ गैया बिकैं बछिया महिषी बहु खच्चर बेचत हैं सौदागर । अज मेख अनेकन देसन के कहुं दुम्बा लिए खड़े हैं नय नागर ॥ धेनु पकोन बिकैं बहु गाय हैं सुद्ध सतोगुन के सुभ आगर । गुजराती विलाती वो देखिलो बैल खरीदत बेचत बुद्धि उजागर ॥ ८३ ॥ सारस चकोर बिकैं बहु तीतिर लावा बटेर अनेकन सोहैं । त्यों बैनी माधव लाल घने लसैं खंजन और कपोतहु मोहैं ॥ मैना

अफीम लिए कोऊ यार में ठाढ़े बतासे। खेलत हैं सतरंज गंजीफा कोऊ यार मैं लिए ढारत पासे। बन्दर कोऊ नचावैं कलन्दर देखत हैं जन ठाढ़ तमासे ॥ ९० ॥ टिकुली बिंदुली सटिया कोउ लेत है नारि नवीन महा रंग राते। गुड़वा गुड़िया दुलरो तिलरी कोऊ लेतीं खड़ी छबि सों मुसकाते ॥ चूरी कोऊ लहटी दुविया कोऊ घूंघट ओट चलावतीं घाते। कंचुकी लेत कोऊ कुरता कोऊ सान बतावती हैं मदमाते ॥ ९१ ॥ अंगुठा बिछिया पहरी को बेसाहति हरा छबीली मोलावती कोऊ। पायल पावठ लेती कोऊ कटि किंकिनी मोल चुकावती सोऊ ॥ पहुंचा पहुंची कर कंकन लै झलझलावन लै झमकावती वोऊ। हंसुली नथिया झुलनी झुमका तरका तरकी पै भटूरे है दोऊ ॥ ९२ ॥ दोहा। भयो ग्रंथ यह पूर अब सुर गुर के परसाद। सज्जन सुमति सुसील जग ते नर करिहैं याद ॥ ९३ ॥ ग्रंथ अंत बदन करौ शिव अज बोसु गनेश। बानी जगरानी हरपि रच्छा करौ हमेस ॥ ९४ ॥ विद्यागुर मेरे अहैं जासु नाम कविराम। तिनके कृपा कटाच्छ ते पूरन भो मम काम ॥ ९५ ॥ पुनि पुनि कर जोरै करौं कवि के कविन प्रनाम। भए जोहैं अब होंहिंगे सुमति सुसील ललाम ॥ ९६ ॥ जातिफसेरा मित्र मम चेतराम सुनाम। तिनको मनमत लहि सुभग कियो ग्रंथ अभिराम ॥ ९७ ॥ जगत विदित जगदीसपुर साधावाद मझार। बेनी माधव मिश्र तहं रहत सुसार बिहार ॥ ९८ ॥ कवित्त। जगत विदित जगदीस पुर धाम राजधानी श्री कुम्मरसिंह भूप महाराज को। बेनी

माधो नाम मम बीगू मिश्र कहैं लोग कान्हकुब्ज विप्र बर
हिमति दराज को ॥ जिला फतेपुर असनी के वासी रामक-
वि चितदै पढ़ायो छंद रीति सुभ काज को । याते यहि ग्रंथ
को बनाए निज बुद्धि बल माथ नाय बार बार सज्जन समाज
को ॥ ९९ ॥ दोहा । बनइस से चालिस सुभ संमत आसि-
न मास । भृगु बासर ते रस असित मघा नषत परकास ॥
१०० ॥ गंगातीर सलेम पुर पूर भयो यह ग्रंथ । जाके पढ़त
सुनत गुनत देषि परत सत पंथ ॥ १०१ ॥ तिलक दुवेदी विप्र
बर ताहि सदन सुष पाय । भयो पूर यह ग्रंथ अब संत कृपा
उर छाय ॥ १०२ ॥ श्री महंथ जगदीसपुर कृष्ण प्रसाद सु
नाम । तिनते आसिष लहि परम रच्यौ ग्रंथ सुखधाम ॥
१०३ ॥ सवैया । सूर सपूत भए तुलसी निज बुद्धि से जे बड़
ग्रंथ सुधारे । नानकसाह कबीर औ केसव ए सब प्रान
अधार हमारे ॥ और अनेक भए कबि जे बहु छंद रचे हरि
नाम पुकारे । ए सबको सिरनाय मनाय किए रचना बेनी
माधो बिचारे ॥ १०४ ॥ इति श्री बेनीमाधव कवि उप-
नाम बीकू मिश्र जगदीसपुर निवासी कृत शुभंभूयात् ॥

अथ पद्म पुराने प्रमाने दरदरक्षेत्र माहात्म भाषा ।

दोहा । बंदौ नारायन प्रथम नर नरोत्तमहि ध्याय । बानि
विनायक व्यासगुरु तिन पद सीस नवाय ॥ १ ॥ एक समै
आसन किये रोम हर्ष अति हर्ष । सौनकादि रिषि ना मह

भाष्यो आनंद-वर्ष ॥ २ ॥ समदरसी तुम सूतजी साधुन सुपदातार । चारिऊं जुग मधं छेत्र कहं कहिये सो यहि वार ॥ ३ ॥ सत जुत त्रेता द्वापरौ अरु कलिजुग ए चार। तिन मधं छेत्र प्रधान कह सो कहिए बिस्तार ॥ ४ ॥ कहि सूत अति धर्म सों सुनऊ मुनीस उदार । चारिऊं जुग मधं छेत्र जो बरनत मति अनुसार ॥ ५ ॥ सतजुग मैं पुस्कर प्रबल नैमिष त्रेता माहि। द्वापर मैं कुरुछेत्र अरु कलि गंगा सम नाहि ॥ ६ ॥ गंगद्वार हरिद्वार पुनि प्राग कासिका मान। दरदरछेत्रऊ पांच तह मुक्तिदासिका जान ॥ ७ ॥ तामै दरदरछेत्र जह सरजू गंगा संग । दरस परस अस्नान ते नर नारायन अंग ॥ ८ ॥ सौनकऊवाच । सौनकादि कहि सूत सो कह्यौ भागवर आप। दरदरछेत्र महात्म किमि गंगा मिली अमाप ॥ ९ ॥ किमि दरदर को तेज कहं अपर नाम है विप्र। ते सब भापऊ विप्र वर कलिमल हरना छिप्र॥ १० ॥ सूतऊवाच ॥ लोक लोक परजटन करि नारद मुनि मन लाय। गए बिधाता के सदन एक समै हरपाय ॥ ११ ॥ कमलासन आसीन लखि कमलज को सिर नाय। मुनि ता निकट रहे तिन्हैं मिले प्रेम सरसाय । १२॥ चतुरानन आदर सहित पूछत भे तेहिकाल। मुनिवर भापऊ लोक सब कुसल सहित सुभचाल ॥ १३ ॥ नारदऊवाच सकल लोक कल्यान जुत कृपा आपकी पाय। किए आप रचना जिन्है तेहि किमि दुख दरसाय ॥ १४ ॥ तदपि धर्म कलि के प्रभा जग्य दान तपहीन। नहीं क्रिया भूलोक मैं धर्म नास बलहीन ॥१५॥ प्रथम सुने हम छेत्र जो भुक्ति मुक्तिदा

गौन । महा महत्व प्रगट करत भा अट्ठस्य अब तौन ॥ १६ ॥ जगथली रमनीअ उत चतुर्वाङ्ग सुपधाम । नाम विमुक्ति निमेषली सबते परे ललाम ॥ १७ ॥ जपी तपी द्विज देवता क्रिया करन के हेत । अरु आकर्षन करन को इस्थिर रहत सचेत ॥ १८ ॥ दोउ तट वासिन के अहै करतलही मैं मुक्ति । सुरसरि उत्तर बसत जहँ वाल्मीक मुनि जुक्ति ॥ १९ ॥ छंद चौबोला ॥ तेहि थल महा मुनिस्वर तप हित बास करत चितलाई । देव देव श्रीविष्णु कृपा निधि आपहु रहत सदाई ॥ तेहि करजोरि दंड इव परिकै नमस्कार उच्चारै । हम उनको दरसन के कांछी पूरहि आस हमारै ॥ २० ॥ हे चतुरानन कृपासिंधु प्रभु यह आज्ञा अब दीजै । जामैं मिलै मोहि श्रम थोरे यह आसिषा करीजै ॥ सुनि नारद के वचन कामलजा कह्यौ सिद्धि तुव कामैं । मिलै ततक्षन मन वाँछित फल भाषित होंहि ललामैं ॥ २१ ॥ एक मुहूर्त ध्यान करि ब्रह्मा नारद वंदन कीन्हा । ता पाछे मुनि सभा सय।ने ब्रह्मवादि चित दीन्हा ॥ ब्रह्मा जीते नमस्कार करि चलन हेतु मन लाए । गर्ग परासर गालव आरह भृगु वशिष्ठहु धाए ॥ २२ ॥ अत्रि कुशिक गौतम मुनि आदिक ब्रह्मलोक ते आए । मृतुलोक जहँ अद्भुत क्षेत्रहि देषद को मन लाए ॥ महा प्रसन्न महर्षि हर्षजुत मुक्तिक्षेत्र कहँ देषा । वास किये तहँ मुनि समाज महँ भार्गवजीत परेषा ॥ २३ ॥ पारासरमुनि के आश्रमते गर्ग जहाँ अस्थाना । पंचकोस ये अति उत्तम थल अति फलदायक माना ॥ एककोस दर्दर आश्रम तक दरदरक्षेत्र गनाये । ब्रह्मभई अस्थान मध्य

मै भार्गव के मन भाये ॥२४॥ नराचछंद। मुनीस सौनकादि जे कहेत ग्रतते यहै। मुनीन वृन्द मध्य श्री भृगू मुनी तपै कहै॥ रहे सुता सुसिष्य दर्दरी रिषी तहां गनी। कहे भृगू मुनी तिन्हैं कहां कही अवै भनी॥ २५॥ सहन तद्यरावपूत भापते तहां भए। विमुक्त नागकेत वैठि श्री भृगू यहै ठए॥ रहे सुब्रह्म मैं परायनां सदान ज्ञान है। त्रिकाल ज्ञान जास के मनुष्य हेतु ध्यान है॥ २६॥ यहै सथान पर्म धाम देनहार है सही। कली कलेस नास गंगधार ते करी सही॥ परंतु गंग के अभाव मैं कली प्रचंड है। तवै अनीत चौर कर्म होंहिंगे अषंड है॥ २७॥ प्रभाव ए सथान के जु आजु निर्मलै अहै। जहूर भंग होइगो विचार ते मनै महैं॥ भृगु तवै सु दर्दरी मुनीन ते कह्योसही। वसिष्ट ब्रह्म जो रिपीस ह्यां पधारिये कही॥ २८॥ कह्यौ अनेक भांति तै विनै सरज्जु हेत है। रिपीस ब्रह्म तै निसक जाइ ह्वै सचेत है॥ यहै उपाइ कीजिए मिलै जु सर्जुधार है। महातमा वसिष्टजी कृपाल वै अपार है॥ २९॥ रिषीन मैं बिदावरै न भंग बैन जानिए। तुरंत सर्जु आयहै कछू न संक मानिए॥ वड़े दयाल हैं वसिष्ट नाथ के कहे सुनो। रहो न भार आसही सु आयहै हिये गुनो॥ ३०॥ भुजंगप्रयात छंद॥ यहां जान्हवी सर्जु मैं सर्जु होवै। तवै ब्रह्महत्यादि ह्वां वैठि रोवै॥ महा उग्र जो पाप सो सीस नवै। लघू जो अहैं ताहि की का गनावै॥ ३१॥ कली जो कली सो सबै तेज धारी। तवै जीव जेहै मनुष्यादि भारी॥ करें संग मैं मज्जनै जाइ जोई। किधौं गंगधारा धसे पाप धोई॥ किधौ मान

त्यागै काकू केच माहीं। किधौं गंग के तीर संका बिनाहीं॥ किधौं सङ्गमैं मैं मरै न्हाइ भावै। बिना जग्य जापै सु बैकुंठ धावै॥ ३३॥ गुरू ते सुने बैन दर्दर मुनीसा। बड़े नम्रता से धरे चर्न सीसा॥ अजोध्यापुरी को गए प्रेम बाढ़े। लषे राजधानी भरे हर्ष ठाढ़े॥ ३४॥ वहां ते वसिष्ठाश्रमै मैं पधारे। गिरे दंड सो भूमि मैं सीस धारे॥ लषे तेज की रासि ज्यौं अग्नि ज्वाला। मनो सांत को रूप ब्रह्मर्षि आला॥ ३५॥ मुनीसान मैं श्रेष्ठ ऐसो न कोई। लषेना कहूं देव भूलोक मोई॥ रमा कांत है की बिधाना यई है। किधौं जोति को रूपता जोतिई है॥ ३६॥ मुनी दर्दरौजी पुनः कै प्रनामै। कहे सो कहे जो भृगू बैन ठामै॥ बिधी सो सुन्यौ चित्त दै कै मुनीसा। भए हर्ष मैं सो कह्यौं काह कीसा॥ ३७॥ तबै दर्दरौ संग वसिष्ठ ज्ञानी। गए तीर सर्जू जो सर सो प्रनामी॥ तहां तेजधारी मुनी कै प्रनामै। किये नम्रता सो निनै ताहि ठामै॥ ३८॥ कहे ब्रह्म के पुत्र वसिष्ठ जे हैं। सुनो भद्र भृगु आश्रमैं जाऊ एहैं॥ मुनी दर्दरौ साथ आनंद भारा। वहां गंग औ आप को एक धारा॥ ३९॥ सुनै जाग्हवी ते मिलै हेतु धाए। मुनी दर्दरै साथ सर्जू सुभाए॥ भृगू देषि धारा महा हर्ष छाए। नमस्कार कै अस्तुती को सुनाए॥ ४०॥ सोरठा। भौ भै हरनी देवि सेवि सदा सुर वंदिनी। तोहि प्रनाम कै धेवि श्री भृगुमुनि अस्तुति करत॥ ४१॥ महिमा अगम अपार शिव मानससर ते प्रगट। कलि मनुष्य भौ पार दरस परस मज्जन करत॥ ४२॥ अस्तुति सरजू केर यहि प्रकार भृगु मुनि किये। सङ्गम भा ता बेर

गंगा सरजू के तहां ॥ ४३ ॥ भो कल्लोल अपार घोर सोर सो सब्द भो । पुन्यक्षेत्र तपदार दद्दर मुनि तहं वास किय ॥ ४४ ॥ महामहं वह धाम सदा पुन्यफल देत है ॥ हरि हरात्मक नाम पयौ क्षेत्र को तबहि ते ॥४५ ॥ भृगुआश्रम ते पूर्व पारासर आश्रम जहां । ए हरिक्षेत्र सुधूर्व नारायन आत्मचि गनो ॥ ४६ ॥ ताते पश्चिम भाग श्री दुर्गा आश्रम जहां । सो शिवक्षेत्रहि ठान तहां मुक्ति साजुज मिलै ॥४७॥ तिरजग जोनी जीव पसु पच्छी कीटादि जे । जे अचार बिन पीव मरेऊ परम गति ते लहै ॥ ४८ ॥ जो मानुज को रूप म्रतु प्राप्त हो तन तजै । जात ब्रह्म मैं पूर और मुक्ति साजुज मिलै ॥ ४९ ॥ दद्दरक्षेत्र न आन पाप नास के कारन मैं । संचित जन्म पुरान जरत क्षेत्र मग पग धरत ॥ ५० ॥ छंद तोमर ॥ गिरही रहै सब पाप । अनयास लागत आप ॥ जब क्षेत्र दद्दर जात । तिहि रहत फिरि न गात ॥५१॥ कहि सूत या विधि बैन । सपु सौनकादिक नैन ॥ विधि हंस सो कहि दीन । जग मुक्ति तीरथ चीन ॥ ५२ ॥ उत जाऊ हौ कर हाल । इत स्याइयो ततकाल ॥ जहं देव देव प्रतच्छ । सुनि हंस ह्वौ तुम गच्छ ॥५३॥ तब पंथ को फहराय । नभराह ते तहं जाय जहं भुक्ति मुक्ति सु क्षेत्र । अरु गंग सर्जू जेत्र ॥ ५४ ॥ उत चतुर्भुज भो हंस । मनु लक्ष्मीपति अंस ॥ तबते कहै सब गाय । यह हंसक्षेत्रहु आय ॥ ५५ ॥ फिरि हंस गा विधि लोक । लखि ब्रह्म के मन सोक ॥ तब ब्रह्मा आतुर धाय । गत मुक्ति क्षेत्र तुराय ॥ ५६ ॥ भुज चारि धारन दंड । कर मैं कमंडल मंड ॥ अरु मेखला कहं धारि । मुनि भेष स्वच्छ

विचार ॥ ५७ ॥ करते हरी कर ध्यान। पहुँचे सु क्षेत्र महा-
न ॥ तितही पिता हरि हेरि। अरु संभु को लपि फेरि ॥ ५८
वह हर्ष ना कहि जाय। जिमि अंध लोचन पाय ॥ पुनि
देव जच्छ वनाय। एक सम्मतै ठहराय ॥ ५९ ॥ किअ पित्र
जज्ञ महान। विधि सास्त्र के परमान ॥ भृगु आदि जे मुनि
तत्र। हरपे गए विधि जत्र ॥ ६० ॥ सुनु सौनकादि रि-
षीस। यत्त पित्र जज्ञ अधीस ॥ करि श्राद्ध ह्याँ मन लाइ।
तन त्यागि मुक्तिऊँ पाइ ॥ ६१ ॥ यहि ठौर ना हित श्राद्ध।
तिन ब्रह्म मैं विनवाद ॥ पुनि प्रस्न सौनक कीन। अब सो
सुनौ परवीन ॥ ६२ ॥ चामर छंद ॥ है बिमुक्ति नाम क्षेत्र
जासु दर्दरौ कहै। पै वहाँ मुनीस ब्रिंद पै अधार सो रहै ॥
कै निरा अधार कै फलै जलै नषानिए। वे बसै कहा कहौं
सरीर अंत भानिए ॥ ६३ ॥ और पंच कोस को प्रमान भाषि
दीजिए। है तहाँ सथान को वषानि दुक्ख छीजिए ॥ ए म
जान याहित अनेक बार भाषते। हौ कृपाल दिव्यद्रिष्टि
सो कहर्न साषते ॥ ६४ ॥ सूतजी कहे पुकारि धन्य धन्य हौ
मुनीस। लोक मंगलै हितै महात्म पूछते सुसीस ॥ आजु
धन्य मैं अहौं कि बार बार गाय हौ। क्षेत्रदर्दरौ महात्म
आप को सुनाय हौ ॥ ६५ ॥ श्री भृगू मुनीस पूत भार्गवो
बिचारिए। बाल्मीक दर्दरौ कुसीसहूं निहारिए ॥ बास को
हरी हरी अरन्य वो परासरौ। ए मुनीस क्षेत्र मैं प्रधान है
हिये धरौ ॥ ६६ ॥ श्री भृगू प्रधान ए मुनीन में गनात हैं।
जासु के समीप मैं हरी हरी लषात हैं ॥ देत मुक्ति देरना
प्रमान मानि लीजिए। देव और अग्नि ब्रह्म गो सथान को

जिए ॥ ६७ ॥ तीन लोक मैं प्रनच्छ क्षेत्रदर्दरी यहै । औ रिपीस किन्नरी प्रनच्छ जचई रहै ॥ जो तपी जपी उदंड ध्यान लावते यहां । पावते मनोर्थ सर्व जाहिरै कहां कहां ॥६८॥ हैं जहां प्रनच्छ विष्णु औ महेस ब्रह्म हैं । औ बड़े बड़े मुनीस भक्ति जुक्त थंभ हैं ॥ इंद्र आदि देवता विरोधहीन वास है । काम मोक्ष अर्थ धर्म जास हाथ राम है ॥ ६९ ॥ हेम दान भूमिदान रत्नदान देहिं जो । जाप जज्ञ अस्वमेध जासु पुन्य लेहिं जो ॥ तीन क्षेत्र दर्दरी गए मिलै प्रमान है । रोग सोग जुक्त जीव कौनहू न म्लान है ॥ ७० ॥ जास क्षेत्र जो मनुष्य दर्दरी मुनी जहां । संगमैं जहां सरज्जु गंग धारहू वहां ॥ मज्जनौ करै सभक्ति श्राद्ध पित्र जो करै । अंत मैं विमान बैठि विष्णुलोक मैं परै ॥ ७१ ॥ जो मरै जरै तरै नरो नरायनो समा । जो मुवै परै जलै त्रिताप अंत मैं क्षमा ॥ मर्न काल क्षेत्र नाम जासु मुक्ख ते कढ़ै । ताहि देखि चित्रगुप्त हाथ जोरिकै रढ़ै ॥ ७२ ॥ क्षेत्र मांह नित्त कित्य दान न्हान जो करै । विप्र हो कि बैस हो कि क्षत्रिधर्म को धरै ॥ कोल हो कि भिल्ल हो चंडाल चर्मकार है । जीवनो सुमुक्ति ताहि होतना अवार है ॥ ७३ ॥ जो कहो अनेक पाप धर्म नष्ट मैं कढ़ै । सो नहातही यहां उद्धार होत ना बढ़ै ॥ हैं हरी प्रनच्छ आप तो तहां कहां कमी । मुक्ति जास दासिका करी सु ताहु को नमी ॥७४॥ ठौर ठौर को जु पाप तीन जन्म लोक हो । वाच काय मानसी सरीर धारि जो लहो ॥ तीन गंग मैं नहात धुए होत जानिए । गंगतीर को जु पाप नास क्षेत्र मानिए ॥ ७५ ॥ जो मनुष्य क्षेत्रदर्दरी कि कांक्षना

करै। ता समैं पुरान पाप सीस पोटि कै परै॥ औ विहान भागठौंकि मौन मच्छ मारते। रोदते घरी घरी बिद्धरि कै पुकारते॥ ७६॥ दीपक छंद॥ हरिको जु ध्यान नाना वि-धान। परि प्रेम माहँ जानहु न आन॥ भरि जन्म कीन सोरा प्रकार। उन क्षेत्र ज्ञान पावा प्रचार॥७७॥ नहिं और कर्म-कारि विचार। करि जतन हारि बैठे अपार॥ कलि दंड घोर पावै अथोर। नहिं क्षेत्र ज्ञान पावै सजोर॥ ७८॥ इक कोस केर लंबा प्रमान। तिहि नाम क्षेत्र आरन्य जान॥ मुनिश्रेष्ठ सौनकादिक सुजान। उत गंग मातु के कोपा आन॥७९॥ जह गंग और सरजू मिलान। उत भार्गदेव थानै प्रमान॥ तित कीन जौन मज्जनौ जाय। फल वाजपेइ जग्यौ सु पाय॥८०॥ द्विज दान जाइ जा कामधेनु। फल प्राप्त होत पूरो सचेत॥ अरु दर्स कीन औ नीर पान। तिन जात स्वर्ग बैठे विमान॥८१॥ कातिकी नहान ता ठौर कीन। कुल को-टि पुरुख तारे कुलीन॥ अरु विष्णुवाद मैं भा सलीन। जप रासि तुला के सूर्ज कीन॥ ८२॥ तव जाक्ष और आये सु-देव। मनु सिद्धि आदि आगे सदेव॥ विधि भोग तीर्थराज उदार। नदियां अनेक औ क्षेत्र धार॥ ८३॥ मथुरा अ-वंतिका कामिकादि। मिलि सप्तपुरी ह्यां बास आदि॥ जो कोउ तीर्थ को बास भूमि। कवरे बर्नन है गाम भूमि॥ ८४॥ यह दर्स तो साक्षात मुक्ति। कहि कौन पार पावै [illegible]॥ [illegible] पूर्ण नहावैं। फल कौन [illegible] ॥ ८५॥ तिनुकी नहान को [illegible] कातकी [illegible] ॥ अरु [illegible] तीर्थ पूजा विधान। [illegible]

तासु कौन गा पार जान ॥८६॥ हर कातिकीन सातौ पूरीन। असनान ध्यान राषै दुरोन ॥ निज मुक्ति हेत सेवै दुआर। भरि मास रहै भाषै पुकार ॥ ८७ ॥ कलि मैं न और दर्दर समान। नरलोक माहिं ना और थान ॥ श्रम थोर भूरि पावै प्रताप। मति भूल मूढ़ कारो विलाप ॥ ८८॥ यह भुक्ति मुक्तिदाता उदंड़ ॥ तिहुं लोक सुप्यदा है अपंड। कलिबाध नास कै के सुतंत ॥ पठवाई देत श्री लोक अंत ॥ ८९ ॥ हरिगीता छंद ॥ विनिया सुनो बहुताप की नर करै जो असनान है। इस भांति सास्त्र प्रमान सो करि जल ते पर मान है ॥ जिनको अक्षै कहते सवै वह पुन्य होत नक्षै कवो। फल तासु को वरनौ सुनौ मन धरौ हे मुनि जू सवो ॥ ९० ॥ करि वाजपेइ सुअस्समेधहु जज्ञ को फल जो कहै। फल होत सो असनान मात्रहि क्षेत्र दर्दर में कहैं ॥ छिति मैं जु तीरथ नासते सब आवते दरदर सही। यहि ते किये असनान कातिक मिलत फल सिगरे कही ॥ ९१ ॥ मृतुलोक मै इस क्षेत्र को सेवन करो मेरे पितृ। परजटन करि के तिर्थ देसन दर्प सो पाये पितू ॥ विन क्षेत्र दरदर के गए सव ठौर को फल तुच्छ है। जिमि सजी भूषन वंदरी विन कान की विन पुच्छ है ॥ ९२ ॥ पंच कोस में जो देव रिप्यादिक न पर दक्षिना दिया। तिन गनहु सप्तपुरीन के परदक्षिना फल को जिया ॥ अरु देव किन्नर जच्छ आदिक तासु नित हारे रहै। जिन पंचकोसी मध्य वासी तासु को समता लहै ॥९३॥ प्रथवी सवै अरु दीप सातो रटन फल जो पाइए। वह हरि घरौ के क्षेत्र के पंचकोस मैं सोइ गाइए ॥

बहिगै रगत कोटिन जनम के पाप हहराते हिए। कविराम
भृगु भगवान जहं निसि बासरौ बासा किए ॥ ९४ ॥ भृगु
क्षेत्र यह आरन्य मैं परिवार तजि बासा किये। लघु असन
इंद्रीजीत पद्मासन हरिखासा दिये ॥ ते पुन्य के भाजन
जिन्हे हरक्षन हरी हर ध्यान हैं। इतहूं बन्यौ उतहूं बन्यौ
दुहूं ठौर मैं सनमान हैं ॥९५॥ मुनि दर्दरौ भगवान भृगु के
आश्रमहि ते जानिए। दच्छिनदिसा तहँ हंसतीरथ प्रगट है
यह मानिए॥ जहँ हंस के भुज चारि प्रगटे देपि मुनि अचरज
ठए। भगवान जहं अचरज न तहं जहं होत नित कौरति
नए ॥९६॥ यह हंसक्षेत्रहुं ते जु पच्छिम गर्गक्षेत्र प्रमान है।
तहं नारि नर औ जीव कौनहुं न्हाय करि शिव गान है ॥
तिन होत शिव के रूपसम गुन भरे नाना भांति के। इनमैं
न भेद विचारिए तन होत सुवरन कांति के ९७ गर्गआश्रम
कौन ता मुनि कपिलक्षेत्र सुठाम है। पर अचरहूं नर नारि
जानत गए पूरन काम है ॥ कपिलेस्वरी देवी तितै अति हर्ष
सो किअ बास है। उतपात नासत पुन्य बढ़ि २ होत पूरन
काम है ९८ कपिलेस्वरी ते दिशा उत्तर बिमल तीर्थ पुनीत
है। तहं बिमल ईस्वर देव संकट हरन जन के मीत है ॥ जत
सिद्धि होत प्रसिद्धि पूजत धूप अक्षत फूल सों। पुंगी [illegible]
फल आदि भला चढ़ाइ [illegible] सूल सों ९९ यदि तीर्थ तो
गंधर्व नारद मुनि [illegible] सेवहीं। नित नित [illegible]
हैं आनन्द सहित [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

तीन लोक जाहिर जस गावै ॥ ज्ञान सहित अथवा अज्ञा-
नहिं । पूरन प्रेम करै अस्ना नहिं ॥ १०१ ॥ प्राप्ति परमगति
ता कहं होई । निःसंदेह संक नहिं कोई ॥ मज्जन करै प्रात
ह्वै मासा । विमलेस्वर पूजै विन आसा ॥ १०२ ॥ उत्तर भाग
याहि ते भाई । कुसविंदक नामक सुपदाई ॥ कुसएस्वर
मूरति तहं जानो । कुसमुनि कै अस्थापित मानो ॥ १०३ ॥
कुसमुनि शिव सो यह वर मागा ॥ छिति नभ गृह रवि जब
लगि लागा ॥ रहौ यहां तब लगि शिव जोगी । दरसे तोहि
तेहि करहु अरोगी ॥ १०४ ॥ दोहा । कुसते जल लै पान
करि वर्ष वितावै साठ । जो फल होत सु होत हैं कुस विन्द-
क सर घाट ॥ १०५ ॥ हरषित मन मज्जन करै कुसविंदक
सर जौन । उर्ध अर्ध दस पुस्तका तारत है नर तौन ॥ १०६ ॥
चौपाई ॥ कुस थल ते है अग्नी कोना । पारासर थल जग
जग भौना । जिनके दरस सदा सुख छाई ॥ कलि के कलुष
नास ह्वै जाई ॥ १०७ ॥ पारासर ते दक्खिन धारा । श्रीगंगा
चलती जिमि आरा ॥ पाप काटि करती है पँडा । जाहिर
जग महं प्रबल प्रचंडा ॥ १०८ ॥ त्रिपावँत वायस तहं आ-
यो । करि जलपान तुरंत नहायो ॥ निकसत हंसरूप तन
पाए । तबते हंसक्षेत्र जग छाये ॥ १०९ ॥ जहं अस्नान किये
ते भाई । पापीहु हंसी गति पाई ॥ हंस सरिस भा निर्मल
सरीरा । मुक्ति मिलन तहं तनक न पीरा ॥ ११० ॥ दोहा ॥
यह विमुक्त जो क्षेत्र है तिनके ए भुज चार । हंस गर्ग कुस
क्षेत्र औ पारासर उद्धार ॥ १११ ॥ चौपाई ॥ यहै हेतु सो
तुम्है जनाए । क्षेत्र विमुक्त चारि भुज गाए ॥ अब त्रिसेपला

कारन गाई। चित दै सुनिए देत सुनाई ॥ ११२ ॥ देव ब्रह्म औ संकर नाखा। ए तीनौ भेषला रखाखा ॥ सतजुग त्रेता द्वापर गाई। तीनहु जुग से गुप्त सदाई ॥ ११३ ॥ जो बिमुक्त यह तीरथ नामा। भुव महं रिनमोचन सुखधामा ॥ भृगु आश्रम के उत्तर माहीं। पुस्कर नाम तीर्थ दरसाहीं ॥ ११४ ॥ कर्म अस्नान करै जो कोई। देव पित्र हित तर्पन जोई ॥ श्राद्ध देव पित्रन कहं कीजै। पित्र नरिन मैटै जस लीजै ॥ ११५ ॥ दोहा। संगम ते उत्तर दिसा मोचन पाप सुतीर्थ। तहं मज्जन कीन्हें मिटै ताप तीन नहिं विर्थ ॥ ११६ ॥ सवैया। भृगु जी महाराज के धाम ते उत्तर फूले फले घन को बन हैं। बनवासी मुनीन के हेतु अपूरब किन्नर जच्छ रचौ घन हैं ॥ अति पावन सोभा सरोज घने नित देव निवास करै छन हैं। तरु कुंज ठने बने लोनी लता जहरैं विहरैं मुनि के मन हैं ॥ ११७ ॥ भगवान जहां नित वास करैं गन चारि लिए सुख सों विहरैं। अरु साथ मैं जाके उमापति आप पदारथ चारि लिए ठहरैं ॥ भुवलोक के धर्मिन के हित दोऊ अनुग्रह कै कै वहां फहरैं। धनि है धनि ते जो वहां दरसैं परसैं करि मज्जन को छहरै ॥ ११८ ॥ यहि क्षेत्र मैं कीन्हें प्रदच्छिना जो सो मनो महिमण्डल को दरसे। अरु सातहु दीप मै जो गिरि कानन ताको मनो सिर दै परसे ॥ कवि राम है भाग बड़े तिनके जिन नैन हरी हरसैं दरसे। दिन पूरे अधूरे जै जाम घरी बिन वाम लिए हरिसं तरसें ॥ ११९ ॥ तिथि द्वादसी मंगलवार परै नव धर्म आरन्य मैं जाय रही। कि परै रवि वासर को संक्रान्ति मिलै तबहूं सट

त्यागि कही ॥ उन्हजाइ नहाइ फलै दुम फूल हरी हर पूजन चित्त गही। तिनके तन पाप न लेन रहै, सान पावन जीवत आप मही ॥ १२० ॥ कोक नाहै हिए पचकोस करै तुपै प्रातही जाइ कै गंग नहावै। देव रिषीन को तर्पन कै भगवान की मूरति को उर ध्यावै ॥ पूजै महामुनि जो भृगु देव है दर्दर को करजोरि मनावै। यन्न औ अन्य नसावन पापहि कै संकल्प चलै हर्षावै ॥ १२१ ॥ घरते पशु बाहिर डारतही मुनी ते करजोरि कै सीस नवावै। हमरे मन मैं पच कोस बस्यौ सो कृपा करौ आय जो पारहि पावै ॥ नर्म को आइ दवाए हमै हरि आइ हनौ जो दया उर छावै। मुक्ति पदारथ चाहत हौ फल और न दूसरो मो मन भावै १२२ दोहा ॥ दर्दरमुनि आदिकन ते सबको करि परनाम। पंच कोस जात्रा चलै अंत मुक्ति तेहि धाम ॥१२३। कलि मैं प्रबल प्रचंड ह्वै करै क्रिया इत गौर। मुक्ति आपने हाथ करि ते गर्जत सब ठौर ॥ १२४ ॥ कवित्त ॥ साभा भरे सोहत नरायन सुधारे चक्र कमला चरन सेवै ध्यान उर धारे हैं। ऐसो को दयाल जगजीवन के जीवन पै रचा करिबे को सब भांति ते पधारे हैं ॥ भाव अनभाव जो पुकारै को तिहारे हम तुम्है छोड़ि हमको न दूसरो अधारे हैं। चारि भुजा धारे वो त्रिभिपचादि तासु दासन के हेतु मुक्ति कर मैं पसारे हैं ॥ १२५ ॥ लाए अङ्ग भसम असम नैन सोहैं नीलवरन जटा को छिटकाए छटा गाता है। सरद पुरानो संग गिरजा बिभूति भंग पन्नग लपेटे निज, दास को बिधाता है ॥ वोढ़े मृगछाल वो कपाल करताल देत मंडन को

साम्प्रीन हित करपाता हैं। बैठे मुक्तिक्षेत्र मैं निसंक करै रंकन को परम उदार त्रिपुरार मुक्तिदाता है ॥ १२६ ॥ सवैया। ए गुनमानत्र मानव मो सुनो दान बसे ब्रिथा जन्म गवावै। या कलिकाल कराल के गाल मैं द्व परिलो परलोक नसावै ॥ जानि परैगी तुम्हैं तबही जबही जमदंड कराल चलावै। क्यों अभिमुक्त के क्षेत्र जात जहां मिलै मुक्ति अन्हात सुभावै ॥ १२७ ॥ या अभिमुक्ति के क्षेत्र को जानत मानत नीकं प्रभाव प्रमानै। सिद्धि जपी तपी औ गंधर्व महोरग किन्नरहू गति जानै ॥ जेते मुनीस बसैं घर-नीतल ते कर जोरि हरी गुन गानै। क्यों भटकै मतिमंद अजौ तन मानुसी पाइकै होत अयानै ॥ १२८ ॥ देषौ जहां निसि बासर ध्यावत नाम प्रशस्त के जे ब्रतधारी। भानु उ-पासक संकर पूजक वैष्णव आदि महातमा भारी ॥ पै फल फूल दलै के अधार रहैं अभिमुक्त के क्षेत्र मझारी। द्व भटकै अटकै जनि मूरष देत पदारथ चारि षरारी ॥ १२९ ॥ दोहा। साठ हजारक वर्ष लों जो फल कासी बास। सो फल दर्दरक्षेत्र को संगम न्हात नेवास ॥ १३० ॥ सवैया। जो फल पुस्करक्षेत्र मिलै अरनै मिष आरन मैं श्रम पाई। कल्प नेवास कै तीरथराज मै जो कलपेगर होतही आई ॥ जो मथुरा कुरुक्षेत्र भ्रमे मिलै सो कबिराम कहै गोहराई। या कलिकाल मैं हाल बिना श्रम दर्दरक्षेत्र गए मिलै भाई १३१ जो गति जोगी कमाय कै जोग लहैं बहुकाल जटा न ब-ढ़ाई। जो रनधीर मरे रन मैं लहै षर्गप्रहार मै पूरनताई ॥ मिलै जो गति कासी बसे अंत मैं वेद पुरान अमान बताई।

सो कलिकाल मैं दर्दरक्षेत्र प्रयास विना मिलै देत सुनाई॥ १३२ ॥ कवित्त ॥ परम अभाग तासे कैधौं मंदबुद्धि तासे कैधौं कामवस ते न छोड़ै धाम पास है । कैधौं जड़ताई के कुबुद्धिताई सीस छाई पाइकै कुसंगताई घेरी गृह बास है ॥ दर्दरक्षेत्र देत धोये परगु दीन्हें नाहिं पोटे कर्म कीने झूठे झूठे बैन भास है । कलि कलमष भार सीस पै धरे अपार पावें नर सोई जाइ जमपुर बास है ॥ १३३॥ छप्पै ॥ रोजगार बस परे गए संगम के नेरे लोभ मोह मन फस्यौ फेरि घर तन नहिं हेरे । संगम किये नहान मास कातिक भर पूरे॥ गंगाजल किये पान पाप भे तन ते दूरे । निष्पाप लौटि आयो घरै मरे क्षेत्र गुन गाइ कै। कविराम राम के दूत सब हरिपुर दिय पहुंचाइ कै॥ १३४ ॥ जो मनसा बच कर्म नित्त पूरौं चितलाई । प्रात करै अस्नान जाइ छल सकल बिहाई॥ धूप दीप नैवेद्य फूल फल प्रेम बढ़ावै । आगत बचन पुकारि आरती वारि चढ़ावै॥ तेहि सुख संपति संतति बढ़ै अंत होत भुग चाहै । या कलिकाल कराल मैं गंगाधर आधार है ॥ १३५ सवैया ॥ पातकी मातु पिता सुत को आयो अचानक संगम थानहिं । कै जलपान लग्यौ तहं लोटन वेठि भज्यौ मुखते भगवानहिं॥ का कहिए लपतै सबके कविराम जू ताक भयो उर मानहिं ॥ दै बुड़की घुड़की जमराज को जात च- ढ़ो सुरलोक बिमानहिं ॥ १३६ ॥ जप जाग न जोग न होम तपौ करिये कहं कोउ के सक्ति नहीं । नहिं धूम कै पान अहार बिना नर है एक पाद सो भक्ति नहीं ॥ कलिकाल मैं लोभ गृसे सबको यह चिंतन चिंतन जात बही । मरी

छेत्र मैं न्हान न आन कछू भगवान भजौ नर सार यही ॥ १३७ जो नर दरदरछेत्र मैं जाय हरी हर को हर बार जपैं ना। ता गत्र सर्प सो या कलिकाल कंपावत नित्तहूं आप कपैं ना॥ न्हाइ कै संगम गंग मैं पैठि जपै शिव गोविन्द ताप तपैं ना। औ सुरलोक मैं सो कवि हाय अरूपाय जमै चले आप छपैं ना ॥१३८॥ छप्पै॥ जै माधव गोविंद किस्न गोपाल गदाधर। गिरधर गोपीनाथ चक्र मुरलीधर आकर॥ वासुदेव भगवान धनुर्धर सीतानायक। जै परारि उद्धरन गीध सोरी सुखदायक ॥ कविराम नाम ए जे जपत तिन्हैं कहा कलि दाप है। ते जात अंत भगवंतपुर तजि जग कर संताप है ॥ जै संकर त्रिपुरारि त्रिलोचन त्रिसूल धारी। नीलकंठ रुद्रेस गंगधर हर कामारी ॥ ससिधर गिरजानाथ शंभु भवजटिल कपाली। सर्वेस्वर भोला उदार बिषधर बिषपाली॥ जै पंचबदन वे पद शिव नाग अंबर करे। जे भजे नाम तिनते भजे कलिकल्मष जम थरथरे ॥ १४० ॥ छंद। कहि सूत सौनक आदि रिषि सो छेत्र के महिमा सबै। जिनको कहै भृगुछेत्र औरहु दर्दरौ हरि हर अबै॥ जे सुनहिं सुनि गुनि करहिं ता बिधि पढ़ि पढ़ावैं जे नर। ते धन्य या कलिकाल मैं पुर अंत तिनकहं हरि हरा ॥१४१॥ मन वाच कर्मन के जु पातक और जे संचित अहै। ते सकल नासक होत तिनके वेद या बिधि सो कहै ॥ भरि जन्म सुत संपति सहित आनंद सो हरषाइ है। कविराम कहि जम सोक दै हरिलोक अंत सिधाइ है॥ १४२॥ दोहा संछेपहि महिमा कहे लागत मास असाढ़। शिव द्रग जुग ग्रह भानु गति पूरन आनंद बाढ़ ॥१४३॥ इति